मोक्षदा एकादशी

प्रकाशन वर्ष 2018
भाषा : हिन्दी

माह : दिसम्बर
अंक : तेरहवाँ

॥ भक्ति दर्शन ॥

भक्ति का महासंगम

- उत्पन्ना एकादशी
- विवाह पंचमी
- मोक्षदा एकादशी
- गीता जयंती
- दत्तात्रेय जयंती
- माँ अन्नपूर्णा जयंती
- गोपाष्टमी: गौ सेवा धाम

www.bhaktidarshan.in | Android App : Bhakti Darshan | Mob.: 097172 55227

उत्पन्ना एकादशी

उत्पन्ना एकादशी का मुहूर्त :–

एकादशी व्रत तिथि : 03 दिसंबर 2018 (सोमवार)
एकादशी तिथि प्रारंभ : 14:00 बजे से (2 दिसंबर 2018)
एकादशी तिथि समाप्त : 12:59 बजे (3 दिसंबर 2018)
पारण का समय : 07:02 से 09:06 बजे तक (4 दिसंबर 2018)
तिथिः 11, मार्गशीर्ष, कृष्ण पक्ष, एकादशी, विक्रम सम्वत

एकादशी व्रत का महत्व और लाभ प्रत्येक मनुष्य को जानना चाहिए क्योकि इस में उनकी मुक्ति का मार्ग छिपा है। प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष को एकादशी होती है, अर्थात एक माह में दो एकादशियाँ होती हैं। इस प्रकार एक वर्ष में कुल 24 एकादशियाँ होती हैं और जब अधिकमास या मलमास होता है तब इनकी संख्या 26 हो जाती है। अधिकमास अथवा मलमास तेरह वर्षों में एक बार होता है। एकादशी के दिन भगवान विष्णु की पूजा की जाती है, एकादशी एक देवी का नाम भी है जिनकी उत्पत्ति भगवान विष्णु जी के ही अंश से हुई थी।

किस दिन से करें एकादशी का उपवास आरम्भ?:–

जो व्यक्ति एकादशी का उपवास रखना चाहता है उसे उत्पन्ना एकादशी से इसका प्रारम्भ करना चाहिए। उत्पन्ना एकादशी मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी को होती है, चूँकि इसी दिन से एकादशी के व्रतों का आरम्भ हुआ माना जाता है। इसलिए इस दिन से ही एकादशी के व्रत मनुष्य को उठाने चाहिए। वर्ष 2018 में उत्पन्ना एकादशी का व्रत 03 दिसम्बर को है।

एकादशी की व्रत व पूजा विधि :–

प्रत्येक एकादशी के लिए उपवास की तैयारी दशमी तिथि से ही प्रारम्भ हो जाती है। चूँकि दशमी की रात्रि से ही एकादशी का भी आरम्भ हो जाता है इसलिए दशमी को एक समय ही सात्विक भोजन करना चाहिए। भोजन के पश्चात दातुन अच्छे से करनी चाहिए जिससे की कोई अन्न का अंश मुँह में न रहे। इसके बाद भोजन न करें, रात्रि में ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें एवं भूमि पर ही सोएं। एकादशी की प्रातः जल्दी उठें व नित्यकर्म आदि से निपट कर स्नान करें। फिर भगवान के सामने व्रत का संकल्प लें, विष्णु जी का षोडशोपचार से पूजन करें व व्रत कथा पढ़ें। व्रत वाले दिन परनिंदा, ईर्ष्या आदि जैसे बुरे कर्मों से दूर रहना चाहिए। दिन भर हरी का नाम लें व रात्रि में भजन कीर्तन करें। द्वादशी के दिन प्रातःकाल ब्राह्मण अथवा किसी निर्धन व्यक्ति को भोजन कराएं तथा दान–दक्षिणा दें। और इसके पश्चात व्रती स्वयं भी भोजन ग्रहण करे। पूर्ण विधि से किया व्रत अत्यंत फलदायी होता है।

उत्पन्ना एकादशी का महत्वः–

जो कोई भी व्यक्ति एकादशी के सभी व्रतों को निष्ठापूर्ण करता है उसका स्थान बैकुंठ लोक में निश्चित हो जाता है। एकादशी एक शक्तिशाली व्रत है जिसे करने से मनुष्य का मन निर्मल हो जाता है, उसे समस्त पापों से मुक्ति मिलती है। यह एक पापनाशक व्रत है, इसके समान पुण्यदायक व्रत कोई नहीं। एकादशी के दिन उपवास रखकर रात्रि जागरण करने से व्रती श्री हरी की अनुकम्पा का भागी बनता है।

जो व्यक्ति पूर्ण दिन का उपवास रखने में असमर्थ हो वह दिन में एक समय भोजन कर सकता है, किन्तु भोजन में अन्न शामिल नहीं होना चाहिए।

उत्पन्ना एकादशी व्रत कथा :–

भगवान कृष्ण ने पांडव पुत्र युधिष्ठिर को इस एकादशी की कथा तथा महत्ता बताई थी। कथा के अनुसार एक राक्षस था जिसका नाम मुर था। वह अत्यंत शक्तिशाली था, अपनी

शक्तियों से उसने देवताओं से उनका राज्य छीन लिया। सभी देवता मुर से रक्षा के लिए भगवान विष्णु जी की शरण में गए। भगवान विष्णु ने देवताओं की रक्षा के लिए मुर से हजारों वर्षों तक युद्ध किया किन्तु वह परास्त नहीं हुआ। तब भगवान विष्णु अधिक शक्ति प्राप्त करने हेतु योगनिद्रा के लिए बद्रिकासुर चले जाते हैं।

मुर भी उन्हें ढूंढता हुआ वहां आ जाता है। विष्णु जी को सोता देख वह उनपर प्रहार करने के लिए आगे बढ़ता है। किन्तु तभी भगवान विष्णु के शरीर से एक कन्या उत्पन्न होती है जो की मुर का संहार कर देती है। विष्णु जी उसका नाम एकादशी रख देते हैं क्योकि वह एकादशी के दिन उत्पन्न हुई थीं। और उसे वरदान देते हैं इस तिथि को जो भी मनुष्य मेरा सुमिरन करेगा उसे बैकुंठ की प्राप्ति होगी।

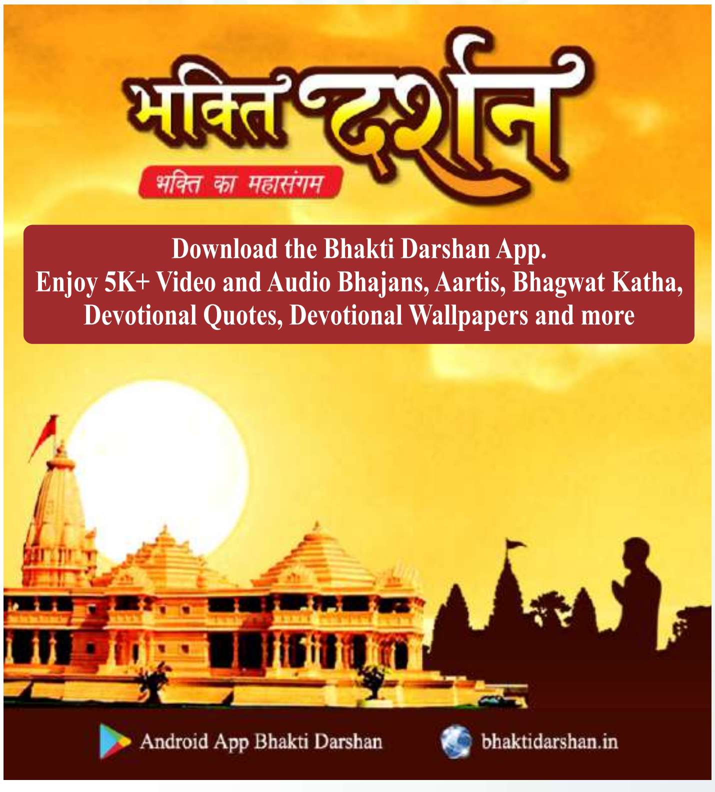

विवाह पंचमी

विवाह पंचमी तिथि :–

12 दिसंबर 2018 (बुधवार)
पंचमी तिथि आरम्भ : 20:21 (11 दिसंबर 2018)
पंचमी तिथि समाप्त : 23:05 (12 दिसंबर 2018)
तिथि : 20, मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, पंचमी, विक्रम सम्वत

विवाह पंचमी एक विवाह उत्सव की भांति मनाया जाता है, जो की अत्यंत विशेष है, क्योकि यह भगवान राम और माता सीता के विवाह की तिथि है। यह उत्सव उत्तर भारत के कई राज्यों में धूमधाम से मनाया जाता है किन्तु सबसे अधिक नेपाल में इसका उत्सव मनाया जाता है। चूँकि माता सीता मिथिलेश राजा जनक की पुत्री थीं और मिथिला राज्य नेपाल का ही हिस्सा है। अतः नेपाल में यह उत्सव परम्परानुसार मनाया जाता है।

कब है विवाह पंचमी?:–

पौराणिक काल में राम–सीता विवाह सबसे पवित्र और अनूठा विवाह था। यह मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। इस वर्ष विवाह पंचमी 12 दिसंबर 2018 दिन बुधवार को मनाई जायगी।

विवाह पंचमी की पौराणिक कथा :–

पृथ्वी में सत्य एवं धर्म की स्थापना के लिए भगवान विष्णु

ने श्री राम और माता लक्ष्मी ने माता सीता के रूप में जन्म लिया। राम का जन्म राजा दशरथ के घर और माता सीता राजा जनक को खेत में हल जोतते हुए भूमि के अंदर से मिली, जिसे उन्होंने अपनी पुत्री के रूप में अपना लिया।

बचपन में माता सीता ने मंदिर में रखा भगवान शिव का धनुष, जिसे अब तक केवल परशुराम जी ने उठाया था, उसे उठा लिया। इसी कारण राजा जनक ने उनके विवाह के लिए शर्त रखी की जो भी राजकुमार इस धनुष को उठा लेगा उसी से राजकुमारी का विवाह होगा।

स्वयंवर के दिन कई बड़े बड़े महारथियों ने उस धनुष को उठाने की कोशिश की परन्तु कोई भी सफल न हो सका। अंत में श्री राम ने अपने गुरु की आज्ञा से उस धनुष को उठा लिया किन्तु प्रत्यंचा चढ़ाते हुए वह धनुष टूट गया। माता सीता श्री राम को देखकर प्रफुल्लित हो उठीं, वह मन ही मन श्री राम की सफलता की प्रार्थना कर रहीं थी। इस प्रकार माता सीता और श्री राम का सुन्दर विवाह संपन्न हुआ।

इस विवाह को देख देवता, गन्धर्व, अप्सराएं सभी हर्षित हो उठे और आकाश से पुष्प वर्षा करने लगे। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड शंख नाद से गूंज उठा। सारी सृष्टि में आनंद छा गया इसी कारण आज भी यह तिथि उनके विवाह के हर्षोल्लास के रूप में मनाई जाती है।

कैसे मनाते हैं विवाह पंचमी? :–

श्री राम ने धरती पर मनुष्य जाति को मानवता का पाठ पढ़ाया था और इसीलिए मर्यादापुरुषोत्तम कहलाये। माता जानकी ने पत्नी के कर्तव्य को दुनिया को समझाया था और कठिन से कठिन परीक्षा दी। इसलिए उनके हर बलिदान हर शिक्षा को याद करते हुए उनके विवाह को संपन्न कराया जाता है। विवाह पंचमी के दिन उनकी कथाएं पढ़ी एवं सुनी जाती हैं। कई जगह राम लीला का भी आयोजन किया जाता है।

वैसे तो विवाह पंचमी अत्यंत शुभ मानी जाती है किन्तु फिर भी इस दिन विवाह आदि के कार्य नहीं किये जाते। कुछ स्थानों पर लोगों का विश्वास है की इस दिन विवाह करने से माता सीता के जीवन में अनेकों दुःख आये थे, जैसे– वनवास, हरण, अग्नि परीक्षा और पुनः वनवास। अतः लोग, विशेषकर मिथिला में, इस तिथि को अपनी कन्याओं के विवाह के लिए उचित नहीं मानते।

मोक्षदा एकादशी

मोक्षदा एकादशी की तिथि व मुहूर्तः–

एकादशी तिथि : 18 दिसंबर 2018 (मंगलवार)
एकादशी तिथि आरंभ : 07:35 बजे (18 दिसंबर 2018)
एकादशी तिथि समाप्त : 7:57बजे (19 दिसंबर 2018)
पारण का समय : 13:19 से 15:21 बजे तक (19 दिसंबर 2018)
तिथिः 25, मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, दशमी, विक्रम सम्वत

एकादशी उपवास सनातन धर्म के सर्वश्रेष्ठ व्रत माने गये हैं क्योकि कोई भी व्रत मोक्ष प्राप्ति के लिए इतना प्रभशाली नहीं है जितना की एकादशी का। साधु संत मोक्ष पाने के लिए जीवन भर कठिन जप–तप, पूजा पाठ आदि करते हैं और बैरागी जीवन व्यतीत करते हैं। किन्तु ग्रहस्त मनुष्य वासनाओं में लिप्त रहता है और मोह–माया से बंधा रहता है ऐसे में शास्त्रों में कुछ ऐसे व्रत और उपवास बताये गए हैं जिससे मनुष्य ग्रहस्त जीवन का सुख उठाते हुए भी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

मोक्षदा एकादशी का महत्वः—

मनुष्य से अपने जीवन में अनगिनत पाप हो जाते हैं, कुछ पाप तो उन्हें ज्ञात होते हैं किन्तु कुछ पाप ऐसे भी होते हैं जो उनसे भूल से हो जाते हैं या जिनके विषय में वे कुछ जानते नहीं। ऐसे ही पापकर्मों का प्रायश्चित करने हेतु एकादशी का व्रत सर्वश्रेष्ठ है। जो मनुष्य को हर प्रकार के पाप से मुक्त करता है।

वैसे तो प्रत्येक एकादशी का अपना महत्व है किन्तु मोक्षदा एकादशी उन सभी में एक अग्रणी एकादशी है। जैसा की इसके नाम से ही ज्ञात होता है यह व्रत मनुष्य को मोक्ष प्रदान करता है। यह व्रत मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को पड़ता है। यह एकादशी इसलिए भी विशेष है क्योकि इस दिन श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की धरा से अर्जुन के माध्यम से संसार को गीता का ज्ञान दिया था। अर्थात इस दिन को गीता जयंती के पर्व के रूप में भी मनाया जाता है।

मोक्षदा एकादशी पूजन विधिः—

मोक्षदा एकादशी के दिन भगवान विष्णु एवं भगवान कृष्ण दोनों ही का पूजन किया जाता है। इस दिन भगवान श्री हरी का धूप—दीप, पुष्प, तुलसी पत्र, पंचामृत, बतासे आदि से पूजन करना चाहिए। इस दिन विधिपूर्ण तरीके से उपवास करने से पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इस दिन मोक्षदा एकादशी की व्रत कथा पढ़नी चाहिए तथा भगवत गीता का पाठ भी करना चाहिए। इस व्रत में अन्न का त्याग करना आवश्यक होता है इसलिए केवल फलाहार भोजन ही खाएं। व्रत का पारण एकादशी के दूसरे दिन सूर्योदय के पश्चात किया जाना चाहिए।

मोक्षदा एकादशी की व्रत कथा :—

एक समय की बात है, गोकुल में वैखानस नाम के राजा राज्य किया करते थे। राजा अत्यंत धार्मिक स्वाभाव के थे, उनकी प्रजा भी खुशहाल थी। एक दिन राजा अपने कक्ष में विश्राम कर रहे थे, तभी उन्हें एक स्वप्न दिखा जिसमे उनके स्वर्गीय पिता नरक की यातनाएं झेल रहे थे। राजा की निद्रा भंग हो गयी और वे हर समय व्याकुल रहने लगे। उन्हें इस हाल में देख उनकी पत्नी ने उन्हें ऋषि मुनियों की शरण में जाने का सुझाव दिया। पत्नी की बात मान वह एक आश्रम की ओर चल दिए। वहां उनकी भेंट पर्वत मुनि से हुई, मुनि ने राजा के मन का हाल जान दिव्यदृष्टि से सब कुछ देख लिया। और फिर राजा को बताया की उनके पिता सचमुच में नरक के कष्ट झेल रहे हैं। राजा ने कारण पूछा तो ऋषि ने कहा उन्होंने पूर्वजन्म में पाप किया था। उन्होंने सौतेली स्त्री के वश में आकर अपनी पहली पत्नी को सम्मान नहीं दिया, इसी पाप के कारण उन्हें नरक में यातनाएं मिल रही हैं। फिर राजा ने उनकी मुक्ति का उपाय पुछा तो इस पर मुनि बोले की मार्गशीर्ष की शुक्ल एकादशी पर व्रत कर के उसका पुण्य अपने पिता को दे दो, इससे उन्हें मुक्ति प्राप्त होगी।

राजा ने ऐसा ही किया, विधि पूर्वक व्रत कर के उसका पुण्य अपने पिता को दे दिया। इस से उनका पाप क्षय हो गया और वह नरक की यातनाओं से मुक्त हो गए। इस के बाद राजा को एक बार फिर स्वप्न आया जिसमे उन्होंने ने देखा उनके पिता स्वर्ग लोक में सुख से हैं। उन्होंने स्वप्न में ही पिता को प्रणाम किया, उनके पिता ने उनसे कहा की तुमने सही अर्थों में पुत्र होने का कर्तव्य निभाया है। तुम्हारे कारण आज मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हुई है, तुम्हारा कल्याण हो। अपने पिता को सुखी देख राजा भी सुखी हो गया।

गीता जयंती

गीता जयंती तिथि :—

गीता जयंती : 18 दिसंबर 2018 (मंगलवार)
एकादशी तिथि आरंभ : 07:35 बजे (18 दिसंबर 2018)
एकादशी तिथि समाप्त : 7:57बजे (19 दिसंबर 2018)
तिथि : 25, मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, दशमी, विक्रम सम्वत

सनातन धर्म में अनेकों ग्रन्थ तथा उपनिषद लिखे गए हैं, जिनमे से भगवत गीता का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। क्योकि मात्र गीता ही एक ऐसा ग्रंथ है जिससे कोई भी मनुष्य अपने आपको जुड़ा हुआ अनुभव करता हो। किसी भी प्रकार की समस्या श्रीमद्भागवत गीता को पढ़ने से दूर हो जाती है। मनुष्य को कर्म का सही अर्थ समझाती गीता आज के समय में भी पूजनीय है।

गीता जयंती का महत्व:—

गीता का ज्ञान भगवान कृष्ण ने मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन अर्जुन के माध्यम से सम्पूर्ण संसार को दिया था, इसलिए यह दिन गीता जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष गीता जयंती 18 दिसंबर को दिन मंगलवार के दिन मनाई जायगी। द्वापर युग के अंतिम चरण में ही गीता श्री कृष्ण द्वारा जगत को मिली थी। श्रीमद्भागवत गीता में कुल 18 अध्याय हैं जिनमे 6 अध्याय कर्मयोग, 6 अध्याय ज्ञानयोग तथा अन्य 6 अध्याय भक्तियोग के विषय में हैं।

श्रीमद्भगवद गीता का जन्म:—

सनातन धर्म में इसके सबसे बड़े ग्रन्थ के जन्म दिवस को गीता जयंती दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह अत्यंत पवित्र ग्रन्थ है, जिसमे श्री कृष्ण ने कर्मयोग का महत्म्य बताया है। गीता जयंती से उन पावन संदेशों को याद किया जाता है जो श्री कृष्ण ने अर्जुन को दिए थे। यह केवल एक ज्ञान नहीं वरन जीवन जीने की एक शैली है। गीता हमे हमारे होने का अनुभव कराती है, जीवन के उद्देश्य का पालन कराती है।

महाभारत की कथा के अनुसार कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध से कुछ समय पूर्व ही अर्जुन अपने सगे सम्बन्धियों को अपने विरुद्ध खड़े देखकर दुःख में डूब जाते हैं। उनके हाथ से उनका गांडीव छूटने लगता है, और वह शस्त्रों का त्याग कर भूमि पर बैठ जाते हैं और कहते हैं मैं यह युद्ध नहीं कर सकता। राज्य के लिए अपने सम्बन्धियों को मारने से अच्छा है मै वन में सन्यासी जीवन व्यतीत करूँ। मोह में बंधे अर्जुन को देखकर श्री कृष्ण ने उन्हें उनके कर्तव्य और कर्म के विषय में बताया। उनकी शंकाओं का निदान किया, शरीर को मिथ्या तथा आत्मा को ही परम सत्य बताया। श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच का यह धर्म संवाद ही गीता कहलाता है। गीता का उपदेश देते हुए श्री कृष्ण ने अर्जुन को अपने विराट रूप के दर्शन भी कराये थे।

श्री कृष्ण के इस ज्ञान से अर्जुन का मोह भंग हो गया और वे युद्ध के लिए सज्ज हो गए। उन्होंने फिर से अपना गांडीव धारण किया और धर्म की स्थापना हेतु शत्रुओं का नाश किया। गीता जयंती के दिन ही को मोक्षदा एकादशी के रूप में भी मनाया जाता है।

कैसे मनाएं गीता जयंती?:—

गीता जयंती वैष्णव पंथियों तथा कृष्ण पंथियों द्वारा विशेषकर मनाई जाती है। इस दिन श्रीमद्भागवत गीता का पाठ किया जाता है। देशभर में श्री कृष्ण के मंदिरों विशेषकर इस्कॉन मंदिर में कृष्ण और गीता की विशेष पूजा की जाती है। गीता जयंती के अवसर में बहुत से लोग उपवास भी रखते हैं। इस दिन अनेक संस्थानों में गीता के पाठ पढ़े एवं सुने जाते हैं।

दत्तात्रेय जयंती

दत्तात्रेय जयंती तिथिः—

22 दिसंबर 2018 (शनिवार)
पूर्णिमा तिथि आरम्भ : 02:09 (22 दिसंबर 2018)
पूर्णिमा तिथि समाप्त : 23:18 (22 दिसंबर 2018)
तिथिः 30, मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, विक्रम सम्वत

सनातन धर्म के तीन स्तम्भ माने जाते हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश। इन तीनों देवों के संगम है भगवान दत्तात्रेय। मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा को दत्तात्रेय जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष यह 22 दिसंबर 2018, दिन शनिवार को मनाई जायगी। भगवान दत्तात्रेय में न केवल ईश्वर बल्कि सम्पूर्ण गुरु भी हैं इसलिए इन्हे श्री गुरु देवदत्त भी कहा जाता है। भगवान दत्तात्रेय का जन्म मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा को प्रदोषकाल में हुआ था। इनके नाम दत्ता का अनुसरण करते हुए दत्त संप्रदाय का उदय हुआ था। भगवान दत्तात्रेय के दक्षिण भारत में अनेकों मंदिर हैं।

दत्तात्रेय का स्वरूप :—

भगवान दत्तात्रेय जी का स्वरुप दिव्य है, उनके तीन शीश तथा छः हाथ हैं। उनके अंदर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश तीनों के ही अंश विद्यमान हैं।

पौराणिक कथा :—

भगवान दत्तात्रेय जी के जन्म से सम्बंधित एक बड़ी ही रोचक कथा विख्यात है। इस कथा के अनुसार एक बार नारद जी देवी लक्ष्मी, देवी पार्वती और देवी सरस्वती के सम्मुख देवी अहिल्या के पतिव्रत धर्म की अत्यंत प्रशंसा करते हैं। इस से तीनों देवियों को अत्यधिक ईर्ष्या होती है और अपना पतिव्रत धर्म श्रेष्ठ साबित करने के लिए वे तीनों त्रिदेवों से प्रार्थना करतीं हैं की वे देवी अनुसूया की परीक्षा लें। तीनों ही देव इसके विरुद्ध होते हैं किन्तु अपनी पत्नियों के हठ के आगे वे विवश हो जाते हैं। और तीनों ऋषि का भेष बनाकर ऋषि अत्रि की पत्नी देवी अनुसूया के द्वार पर भिक्षा मांगने पहुंच जाते हैं। उस समय ऋषि कुटिया में नहीं होते, भिक्षुकों द्वारा पुकारे जाने पर माता अनुसूया द्वार पर भिक्षा लेकर आती हैं। किन्तु तीनों ऋषि उसे लेने से मना कर देते हैं, वे बोलते हैं भिक्षा स्वीकार करने से पूर्व हमारी एक मांग है यदि आप उसे पूरा करो तभी हम भिक्षा लेंगे। तब देवी अनुसूया ने कहा यदि मेरे वश में हो तो अवश्य आपकी मांग पूरी की जायगी। तब उन्होंने कहा आप हमे वस्त्र उतार कर भिक्षा दें। यह सुनते ही देवी अनुसूया अचंभित हो गयी, और फिर इसे भगवान की लीला समझ हाथ जोड़े और मन ही मन कहा यदि मेरा पतिव्रत धर्म सत्य है तो ये तीनों साधू बालक बन जाएँ। तीनों ही देव छोटे छोटे शिशु बन गए। तब माता अनुसूया ने उन्हें गोद में बैठाकर दूध पिलाया। इस प्रकार उनका सत भी रह गया और आतिथ्य भी हो गया।

अब त्रिदेव शिशु रूप में माता अनुसूया के पास ही पलने लगे, उधर कुछ दिन बीत जाने के बाद भी त्रिदेवों के न लौटने से तीनों देवियां चिंतित हो गयी। तभी देवऋषि नारद वहां आये और उन्होंने देवी अनुसूया के चमत्कार के विषय में देवियों को बताया। इस से उन तीनों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और अपने किये पर दुःख भी हुआ। अपने पतियों को लेने वे तीनों ही देवी अनुसूया के पास गयीं और उनसे हाथ जोड़कर अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। देवी अनुसूया, जो की उन्हें अपना पुत्र मान चुकीं थीं उन्हें देने के लिए तैयार तो हो गयीं किन्तु उन्हें अत्यधिक दुःख हो रहा था। तब त्रिदेवों ने उन्हें अपने अपने अंश से एक बालक उत्तपन्न कर के दिया। यह बालक ही दत्तात्रेय कहलाया।

माँ अन्नपूर्णा जयंती

अन्नपूर्णा जयंती:—

22 दिसंबर 2018 (शनिवार)
पूर्णिमा तिथि आरम्भ : 02:09 (22 दिसंबर 2018)
पूर्णिमा तिथि समाप्त : 23:18 (22 दिसंबर 2018)
तिथि : 30, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, विक्रम सम्वत

अन्नपूर्णा जयंती माता अन्नपूर्णा की उत्पत्ति के रूप में मनाई जाती है। माता अन्नपूर्णा माता पार्वती का ही एक रूप हैं जो उन्होंने संसार के कल्याण के लिए धारण किया था। देवी अन्नपूर्णा भोजन एवं रसोई की उत्पन्नकर्ता मानी जातीं हैं। सनातन धर्म में भोजन के अपमान को देवी अन्नपूर्णा के अपमान के रूप में देखा जाता है। चूँकि पृथ्वी पर अन्न ही मनुष्य के जीवन जीने का मुख्य साधन है, अतः मनुष्य को कभी भी अन्न का अपमान नहीं करना चाहिए।

अन्नपूर्णा जयंती का महत्वः—

अन्नपूर्णा जयंती माता अन्नपूर्णा की उत्पत्ति की आवश्यकता के विषय में मनुष्य को याद कराती रहती है, की किस प्रकार भोजन को बर्बाद करने से पृथ्वी पर अकाल पड़ा था। इस जयंती के कारण मनुष्य माता अन्नपूर्णा को उनके कार्य और उनकी कृपा के लिए धन्यवाद करता है। मान्यता है की जिस घर में अन्नपूर्णा देवी का आशीर्वाद होता है उस घर में कभी भी अन्न का अकाल नहीं पड़ता। और अन्नपूर्णा देवी का आशीर्वाद केवल उस घर में होता है जिस घर में रसोई को साफ और शुद्ध रखा जाता है तथा अन्न का सम्मान किया जाता है। ऐसे घर में धन धान्य की भी कमी नहीं रहती और विपत्ति में परिवार भूखा नहीं सोता।

कब मनाई जाती है अन्नपूर्णा जयंती? :—

माता अन्नपूर्णा की उत्पत्ति अन्नपूर्णा जयंती के रूप में मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाई जाती है। इस वर्ष 2018 में यह दिसंबर 22 को दिन शनिवार के दिन मनाई जायगी। इस दिन निर्धनों को अन्न दान करना भी अत्यंत शुभ माना गया है।

माँ अन्नपूर्णा की पौराणिक कथाः—

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक समय पृथ्वी पर अन्न

एवं पानी समाप्त होने लगा और लोगों में हाहाकार मच गया। देवताओं ने जब इस समस्या को देखा तो वे ब्रह्मा जी की शरण में गए और इस समस्या का समाधान पुछा। तब ब्रह्मा जी देवताओं सहित श्री हरी विष्णु की शरण में चले गए। विष्णु जी ने सभी देवताओं को बताया की इस समस्या का निदान अब केवल शंकर जी कर सकते हैं। और सभी देवों सहित ब्रह्मा और विष्णु जी भी शंकर जी की शरण में चले गए। वहां उन्होंने भोलेनाथ को इस विषय में सब कुछ बताया, जब माता पार्वती ने यह सुना तो उनका ममतामयि मन अपने बच्चों को पृथ्वी पर भूखा तड़पता हुआ नहीं देख सका। उनकी करुणा से जन्म हुआ माँ अन्नपूर्णा का, जिनके एक हाथ में अन्न से भरा पात्र था और दूसरे हाथ में अन्न देने के लिए कलछी थी। सर्वप्रथम शिव जी ने माता अन्नपूर्णा से भिक्षा ग्रहण की और उस अन्न को पृथ्वीवासियों को वितरित किया। और धीरे धीरे पृथ्वी से अकाल का संकट हट गया, सभी देवता माता अन्नपूर्णा की जय जयकार करने लगे। एक कथा में यह भी कहा जाता है की जब श्री राम वानर सेना के साथ लंका में युद्ध कर रहे थे तब उस समय माता अन्नपूर्णा ने ही उन्हें और उनकी पूरी सेना को भोजन उपलब्ध कराया था। माता अन्नपूर्णा ने अपनी नगरी शिवजी की प्रिय नगरी काशी को बनाया।

कैसे करें अन्नपूर्णा जयंती के दिन पूजन? :—

मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन माँ गौरी के रूप अन्नपूर्णा माता की पूजा की जाती है। इस दिन प्रातःकाल उठकर सम्पूर्ण रसोई घर को धोकर स्वच्छ किया जाता है। यदि मिट्टी का चूल्हा है तो उस उसे मिट्टि अथवा गोबर से लीप कर उसक पूजन करें। यदि गैस वाला चूल्हा है तो उसकी सफाई कर के उसके निकट ध्यानपूर्वक दिया जलाएं (गैस से दूर ही रखें।)। इस दिन माता गौरी एवं शिवजी की पूजा का भी विधान है। इस दिन अन्न को व्यर्थ बर्बाद न करने का संकल्प भी लें, क्योकि माता अन्नपूर्णा का आदर करने वाले को अन्न का भी आदर करना चाहिए।

गोपाष्टमी: गौ सेवा धाम

गौ सेवा धाम अस्पताल देवी चित्रलेखा जी द्वारा संचालित एक गैर–लाभकारी संगठन वर्ल्ड संकीर्तन टूर ट्रस्ट की महत्वकांक्षी योजना है। जो की गौ माता और उसके बछड़े के लिए एक आश्रय है। यह हरियाणा के पलवल जिले में स्थित है और लगभग 3–4 एकड़ में विस्तृत है। यहां गंभीर रूप से बीमार और घायल गायों का निःशुल्क इलाज होता है। अब तक यहां सैकड़ों गायों का सफल इलाज किया जा चुका है। यह केवल एक अस्पताल नहीं है, यह उनके लिए आश्रय है जहाँ उनकी निःस्वार्थ भाव से सेवा की जाती है। गौ माता के लिए चारे की व्यवस्था, पानी की व्यवस्था तथा उनके स्वास्थ्य का निरिक्षण आदि इस संस्था द्वारा किया जाता है।

16 नवंबर के दिन गोपाष्टमी के पावन पर्व पर यहां महोत्सव का आयोजन किया गया था, जिसमे मुख्यतः देवी चित्रलेखा जी सहित उद्योग मंत्री विपुल गोयल जी भी शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने गौ संरक्षण और गौ संवर्धन को बढ़ावा देने की बात कही।

गौ सेवा धाम की संचालिका देवी चित्रलेखा जी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने केवल पांच वर्ष दो माह की अल्प आयु में ही गऊ चराने का पावन कार्य शुरू कर दिया था। और हम सभी को उनके इस कार्य को बढ़ाना चाहिए, देश की प्रगति गौ माता के सम्मान में है। उन्होंने कहा की वेदों और पुराणों में भी गौमाता की महिमा का बखान मिलता है, और उनमे ही गोपाष्टमी का महत्व बताया गया है किन्तु आज हम अज्ञानतावश उस संस्कृति को भूल रहे हैं। गौ सेवा सबसे बड़ी सेवा मानी गयी है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को गौ संरक्षण का उत्तरदायित्व निभाना चाहिए।

गौ सेवा धाम के कार्यों और प्रयासों की प्रशंसा करते हुए विपुल गोयल जी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने सदैव ही गौ रक्षा को बढ़ावा दिया है, और प्रदेश में गौ संरक्षण के लिए कड़ा कानून भी बनाया है। गोयल जी ने कहा की गौ सेवा धाम में गौ माता के पेट से पॉलीथिन निकालकर उन्हें नव जीवन प्रदान किया जा रहा है। यह हरियाणा में गायों की सेवा का सबसे बड़ा उपचार केंद्र है। उन्होंने कहा गायों की उपयुक्त जांच के लिए यहां आधुनिक अल्ट्रासाउंड मशीन लगाई जायगी, जिसकी कीमत एक करोड़ रूपए है तथा यह मशीन हरियाणा सरकार की तरफ से यहां लगाई जायगी। उन्होंने अस्पताल को 11 लाख रुपए दान देने की भी घोषणा की और कार्यक्रम की समाप्ति पर देवी जी ने और मंत्री जी ने अन्य मेहमानों के साथ गायों को गुड़ और रोटी भी खिलाई। इस अवसर पर 52 पालों के सरदार अरुण जैलदार, वैश्य समाज के प्रधान बबली परदेसी ,पवन सिंघला, केशवदेव शर्मा ,विष्णु गौड़, पूर्व सरपंच राजेश शर्मा,अनुसूचित मोर्चा भाजपा के जिलाध्यक्ष सुशील कुमार, सहित क्षेत्र के कई गांवों के ग्रामीण मौजूद रहे।

गौ रक्षा व गौ संवर्धन हेतु

गोपाष्टमी महोत्सव

विशाल गोष्ठी महायज्ञ एवं भण्डारा

देवी चित्रलेखा जी

॥ भक्ति दर्शन ॥

भक्ति का महासंगम

DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.

ENJOY 5K+ VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA, DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.